पदम् विभूषण गिरिजा देवी द्वारा गेय उपशास्त्रीय गायन शैलियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

(होरी, कजरी,चैती,सावनी के सन्दर्भ में)

शोध प्रारूप

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग़, आगरा की

डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (संगीत)

की उपाधि हेतु

2016

निर्देशिका :

प्रो० (श्रीमती) सुधा सहगल
संगीत विभाग

शोध छात्रा

अंकू सिंह
पी.एच.डी. (संगीत गायन)

विभागाध्यक्षा

प्रो. (श्रीमती) सुभद्रा कुमारी सत्संगी

कला संकाय प्रमुख

प्रो. रागिनी राय

कला संकाय
दयालबाग़, एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा–

पदम् विभूषण गिरिजा देवी द्वारा गेय उपशास्त्रीय गायन शैलियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (होरी, कजरी, चैती, सावनी के सन्दर्भ में)

भूमिका–

मानव भावनाओं की सुन्दरम् अभिव्यक्ति का साकार रूप कला है, ललित कलाओं के अन्तर्गत पाँच विशिष्ट कलाओं को रसतत्व प्राप्ति का साधन बताया गया है परन्तु समस्त कलाओं में संगीत सर्वश्रेष्ठ है। गीत, वाद्य और नृत्य ये तीनों मिलकर संगीत कहलाते हैं।

पण्डित सारंगदेव ने स्वकृत संगीत रत्नााकर में गायन – वादन एवं नृत्य में गायन विधा को श्रेष्ठ माना है।

नृत्यं वाद्यानुगं प्रोक्तं वाद्यं गीतानुवृत्ति च।

अतो गीतं प्रधानत्वादता दावभिधीयते।।

अर्थात – गान के आधीन वादन और वादन के आधीन नर्तक अतः इन तीनों कलाओं में गान को ही प्रधानता दी गई है।

आचार्य कैलाश चन्द्रदेव जी के अनुसार–ः

गायन की श्रेष्ठता का एक कारण यह है कि राग और ताल की उद्भावना तो तत् वाद्यों और सुषिर वाद्यों में भी आ सकती है परन्तु स्वर मल्लिका में सार्थक शब्दों को गूँथने का कार्य मात्र मानव शरीर के द्वारा सम्भव है। इसलिये गायन और वादन में गायन सर्वश्रेष्ठ है।

पृष्ठभूमि –

शोधार्थी गायन की विद्यार्थी होने के नाते नहीं, बल्कि तर्क सम्मत विचारों के अनुसार इस तथ्य पर प्रकाश डालने का प्रयास कर रही है कि संगीत में गायन का सवश्रेष्ठ स्थान है।

वर्तमान में प्रचलित ध्रुपद, धमार, ख्याल, टप्पा, तराना, रागमाला, त्रिवट, चतुरंग गायन शैलियाँ यदि शास्त्रीय संगीत की श्रेणी में आती हैं, तो गीत, गज़ल, भजन इत्यादि लोक सरल य सुगम की श्रेणी में आते हैं, किन्तु यदि साहित्य में पूर्ण भावात्मकता एवं शास्त्र नियमों में शिथिलता हो अर्थात न केवल शब्दों की ही प्रधानता हो वरन् स्वरों का भी पूर्ण समन्वय हो तो ऐसे संगीत को शास्त्रीय संगीत की श्रेणी में रखा जा सकता है और न ही सुगम संगीत की श्रेणी में अतः ऐसी विधाओं को उपशास्त्रीय संगीत के अर्न्तगत रखना उपयुक्त होगा। यथा – ठुमरी, दादरा, होरी, चैती, कजरी, सावनी, बारहमासी आदि सभी गायन की शैलियाँ उपशास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत आती है।

विषय का प्रादुर्भाव –:

यूँ तो संगीत जगत में अनेक गायिकाओं ने जन्म लिया परन्तु उपशास्त्रीय गायन विधाओं को अपने देश व विश्व के मानचित्र पर लाने का कार्य कुछ उपशास्त्रीय गायिकाओं ने प्रमुख रूप से किया यथा– सिद्धेश्वरी देवी, बेगम अख्तर, सविता देवी, काशी बाई, रसूलनबाई, शोभा गोर्ट आदि परन्तु उपशास्त्रीय गायिकाओं में पद्मविभूषण गिरिजा देवी वर्तमान समय में उपशास्त्रीय गायन शैली के विकास में अकथनीय योगदान देकर परम्परागत कला की कठोर साधना के बल पर जनता को असीम एवं अनन्त सौन्दर्यबोध कराती है।

शोधकर्ती ने विदुषी गिरिजा देवी के गायन को सुना एवं उनकी प्रस्तुती एवं गायन शैली से प्रभावित हुयी जिसके कारण विदुषी गिरिजा देवी जी के बारे में जिज्ञासा उत्पन्न हुयी एवं शोधार्थी द्वारा उक्त विषय का चयन किया गया।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षणः–

शोध प्रबन्धः–

1:– उपशास्त्रीय संगीत की विभिन्न विधाओं का सौन्दर्य बोधः सुजीत गुप्ता : दि० विश्व० 2011

2:– उपशास्त्रीय संगीत की गेय विधाओं पर शास्त्रीय संगीत के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन : राजेशकुमार शर्मा : दिल्ली विश्वविद्यालय 2013

3:– कर्नाटक एवं हिन्दुस्तानी शैली की उपशास्त्रीय विधाओं का तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन एवं नई विधाओं की निर्मित की सम्भावनाऐं : सन्धा श्रीश कथायते : देवी अहल्या विश्वविद्यालय 2005

4:– ठुमरी : एक उपशास्त्रीय गीत प्रकार समग्र अभ्यास : विनोद विश्वनाथ ठाकुर देसाई : शिवाजी विश्वद्यिालय : कोल्हापुर, 2011

5:– ठुमरी की उत्पत्ति विकास और शैलियाँ : शत्रुघ्न शुक्ला : दिल्ली विश्वविद्यालय 1947

6:– ठुमरी के विकास में महिला कलाकारों का योगदान : अरूणकुमार शर्मा : कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय 1993

7:– ठुमरी गायन शैली में भवभूति : एक विश्लेषण अध्ययन, बनारस घराना : गरिमा तेज :

छत्रपति शिवाजी महाराज विश्वविद्यालय 2007

8:— ठुमरी : एक उपशास्त्रीय गीत प्रकार : समग्र अभ्यास : विनोद विश्वनाथ ठाकुर देसाई : शिवाजी विश्वद्यिालय कोल्हापुर 2011

इस सन्दर्भ में शोधकर्त्री ने अपने विषय से सम्बन्धित प्राप्त शोध प्रबन्धों द्वारा, नेट — इन्टरनेट एवं अन्य स्त्रोतों से जो जानकारी प्राप्त हुई उसका विवरण सम्बन्धित साहित्य में दिया गया है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि सम्बन्धित साहित्य में दी गयी जानकारी में उपशास्त्रीय गायन विद्याओं से सम्बधित कार्य हुआ है परन्तु जिस दृष्टिकोंण से शोधकर्त्री अपना शोध कार्य करना चाहती है शोधकर्त्री के संज्ञान में उस विषय पर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है।

अतः शोधकर्त्री ने अपनी जिज्ञावश विदुषी गिरिजा देवी जी की उपशास्त्रीय गायन शैली में न्रतुप्रधान गायन शैली पर गहन अध्ययन हेतु उक्त विषय का चयन किया।

विषय कथनः— ''पदम विभूषण गिरिजा देवी द्वारा गेय उपशास्त्रीय गायन शैलियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन'

(होरी, कजरी,चैती, सावनी के सन्दर्भ में)

उपशास्त्रीय गायन शैलियाँ —

उपशास्त्रीय संगीत अर्थात ऐसा संगीत जो शास्त्र के निकट रहे तथा जिसमें शास्त्रपालन कटिबद्धता से न होकर शिथिलता से होता हो ऐसे संगीत को उपशास्त्रीय संगीत की श्रेणी में रखा जाता है।

उपशास्त्रीय गायन शैलियाँ —

ठुमरी, दादरा, चैती, कजरी, सावनी, बारहमासी आदि।

ऋतुप्रधान गायन शैलियाँ — (होरी, चैती, कजरी, सावनी)

होरी :—

होरी के अन्तर्गत पदों के वर्ण्य विषय में अधिकांशः राधा — कृष्णा और गोपियों की फाल्गुन मास की लीलाओं का वर्णन होता है। इस प्रकार होली के वातावरण में इन गीतों द्वारा मानव — मन झंकृत हो उठता है।

चैती :—

होलिका पर्व के पश्चात् चैत्र मास का आरम्भ होता है तथा इस विधा का रसास्वादन विशेष रूप से इसी महीने में लिया जाता है अधिकाशतः इन गीतों में ऋतु वर्णन के साथ विरह की स्पष्ट झलक दिखाई देती है तथा साहित्य में भगवान राम का स्मरण निहित होता है।

कजरी :—

इस गीत प्रकार का सम्बन्ध वर्षा ऋतु के आनन्द से है कजरी का नामकरण श्रावस मास में घिरने वाले काजल, सरीखे बादलों की कालिमा के कारण हुआ अर्थात बादल की श्यामल छटा इन गीतों की विशेषता है।

सावनी :—

सावन के मनभावन महीने में झूले के गीत, मल्हार इत्यादि गाये जाते हैं वे 'सावनी' गीत कहलाते हैं|

शोध के उददेश्य :—

1 विदुषी गिरिजा देवी के जीवन परिचय पर प्रकाश डालना
2 उपशास्त्रीय संगीत की विधाओं से अवगत कराना
3 गिरिजा देवी द्वारा गेय उपशास्त्रीय ऋतु प्रधान गायन विधाओं पर प्रकाश डालना
4 गिरिजा देवी की ऋतुप्रधान गायन शैलियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जायेगा।
5 गिरिजा देवी जी की बन्दिशों का संकलन किया जायेगा।

अध्ययन प्रविधि :—

शोधकर्त्री द्वारा साक्षात्कार विधि का संचालन एवं प्रयोग विभिन्न विद्वानों, कलाकरों, तथा छात्र—छात्राओं के माध्यम से किया जाएगा। प्रश्नावली विधि को विभिन्न सूचनाएँ एकत्रित करने के उद्देश्य से संचालित किया जायेगा। निरीक्षण विधि के अर्न्तगत साक्षात्कार विधि एवं प्रश्नावाली विधि द्वारा प्राप्त सूचनाओं आंकडों के आधार पर परिणामों का निरीक्षण किया जाएगा।

परिसीमांकन :—

विदुषी गिरिजा देवी का गायन का क्षेत्र अत्यंन्त विस्तृत है अतः समय सीमा में रहते हुये आपके द्वारा गायी गयी शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, लोक संगीत सभी विधाओं गहराई मापना सम्भव नहीं है। अतः समय सीमा को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी का शोधकार्य विदुषी गिरिजा

देवी द्वारा गायी गयी उपशास्त्रीय संगीत में ऋतुप्रधान गायन शैली (होरी, कजरी, चैती, सावनी) प्रत्येक विधा की पाँच बन्दिशों का गहन अध्ययन किया जायेगा।

उपकरण :–

विषय से सम्बन्धित आवश्यक सामग्री ही शोधकर्त्री के अध्ययन के साधन हैं। जैसे–

श्रव्य सामग्री – सीडी, डीवीडी, बन्दिश श्रवण, इन्टरनेट आदि

दृश्य सामग्री – पुस्तकें, साक्षात्कार, वीडियो आदि

अध्ययन के सोपान

उक्त अध्ययन से सम्बन्धित अधिक से अधिक जानकारी उपलब्ध कराने पश्चात् शोध निम्नलिखित अध्यायों में विभक्त किया जायेगा।

भूमिका

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

प्रथम अध्याय – गिरिजा देवी का जीवन परिचय

द्वितीय अध्याय – उपशास्त्रीय संगीत की विधायें एवं इसके प्रकार

तृतीय अध्याय – विदुषी गिरिजा देवी द्वारा गेय होरी एवं कजरी का विश्लेषणात्मक अध्ययन

चतुर्थ अध्याय – विदुषी गिरिजा देवी द्वारा गेय सावनी एवं चैती का विश्लेषणात्मक अध्ययन

पंचम अध्याय – विदुषी गिरिजा देवी जी की बन्दिशों का संकलन

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

संगीत विशारद	बसंत
डॉ० रमाकान्त द्विवेदी	संगीत स्वरित
डॉ० मृत्युंजय शर्मा	संगीत मैनुअल
प्रो० सुधा सहगल	बेगम अख्तर व उपशास्त्रीय संगीत
संगीत पत्रिका	संगीत कार्यालय हाथरस
संगीत समाधान	डॉ०, मधु शुक्ला